राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०: स्कूली शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन

सत्यनाम सिंह
शोध छात्र,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
रामनगर पी.जी. कॉलेज, रामनगर, बाराबंकी

प्रो. (डॉ.) कृष्ण कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
रामनगर पी. जी. कॉलेज, रामनगर, बाराबंकी

सारांश

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा की एक महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका है। नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 21वीं शताब्दी एक पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए भविष्य की आवश्यकता को पूरा करना है। यह नीति भारत की परम्परा और उसके सांस्कृतिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आंकाक्षात्मक लक्ष्य जिसके अन्तर्गत शिक्षा व्यवस्था उसके नियमों का वर्णन सहित सभी पक्षों में सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमता के विकास पर जोर देती है।

कूटशब्दः *राष्ट्रीय, शिक्षा व्यवस्था, आर्थिक, सामाजिक, शिक्षा प्रणाली, परिदृश्य, आंकाक्षात्मक, परम्परा, सांस्कृतिक मूल्य आदि*

१. प्रस्तावना

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन समय तथा परिस्थितियों के अनुसार होता रहता है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से लेकर आधुनिककाल तक अनेक सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन हुए है। वास्तव में परिवर्तन दो प्रकार का होता है। एक परिवर्तन प्रकृति के द्वारा किया जाता है तथा दूसरे प्रकार का परिवर्तन मनुष्य स्वयं करता हैं। प्राकृतिक परिवर्तन मनुष्य के नियन्त्रण में नही होते है। लेकिन मनुष्य परिवर्तन के माध्यम से समाज में कुछ नया करने की कोशिश करता हैं। वर्तमान में यदि किसी समाज में परिवर्तन करने लिए सबसे पहले शिक्षा नीति में परिवर्तन करना चाहिए। इसलिए भारत सरकार ने विश्व भर के मुकाबले बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराने तथा शिक्षा में सुधार करने की दृष्टि से 34 वर्ष बाद सरकार ने शिक्षा नीति में बदलाव करने का फैसला किया। भविष्य की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा नीति निर्माण हेतु 2017 में डॉ. क. कस्तूरीरंगन समिति का गठन किया था। भारत में जुलाई 2020 में सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मंजूरी दी।

प्रथम शिक्षा नीति 1968 में पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी सरकार द्वारा लायी गयी थी। दूसरी शिक्षा नीति 1986 में प्रधान मंत्री राजीव गांधी की सरकार द्वारा लायी गयी। जिसमें 1992 में प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव सरकार द्वारा कुछ संशोधन किए गये थे। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्वतन्त्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। इस प्रकार वर्तमान में 34 वर्ष पुरानी शिक्षानीति चल रही थी। जो बदलते परिदृश्य के साथ प्रभावहीन होती जा रही थी। इसी कारण वर्ष 2019 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (वर्तमान में शिक्षा मंत्रालय) ने नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने को लिए जनता से राय मॉगी थी।

२. पूर्व शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता क्यों?

- नई शिक्षा, शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए।
- बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थ व्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता थी।

- शिक्षा नीति में भारतीय शिक्षा प्रणाली तक वैश्विक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए।

३. भारत की नई शिक्षा नीति क्या है?

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत 2030 तक वर्तमान में शैक्षिक संरचना (10+2) को (5+3+3+4) में परिवर्तित किया गया है। जिसमें शिक्षा क्षेत्र में सहयोग के लिए केन्द्र और राज्य सरकारें देश के सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत के बराबर शिक्षा में निवेश करेगी। इस नवीन शिक्षा नीति में उपेक्षा की गयी है कि बदलते वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप कुशल नागरिकों के निर्माण के साथ भारतीय युवाओं के वर्तमान तथा भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए सामर्थ्यवान होगी। यह नीति सभी मार्गदर्शक उद्देश्यों जैसे उद्देश्यों जैसे पहुँच क्षमता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जबावदेही पर आधारित है।

४. नई शिक्षा नीति के चार स्तर

१. **फाउंडेशन अवस्था**– नई शिक्षा नीति में फाउंडेशन अवस्था में 3 से 8 वर्ष के बच्चों को शामिल किया गया है। इसकी अवधि 5 वर्ष निधारित की गयी है। इसमें 3 वर्ष की प्री स्कूल शिक्षा ऑगनबाड़ी और कक्षा 1 व 2 की स्कूल शिक्षा शिक्षा करायी जायेगी। जिसके अन्तर्गत छात्रों के भाषा कौशल और कौशल स्तर का मूल्यांकन किया जायेगा।

२. **प्रारम्भिक अवस्था**– इस अवस्था में 8 से 11 वर्ष के बच्चों को शामिल किया गया है तथा इसकी अवधि 3 वर्ष निर्धारित की गयी है। इसमें कक्षा 3 से लेकर कक्षा 5 की स्कूली शिक्षा उपलब्ध करायी जायेगी। इस स्तर पर छात्रों के संख्यात्मक कौशल को मजबूत करने पर विशेष बल दिया जायेगा। साथ ही सभी बच्चों को क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान भी दिया जायेगा साथ ही प्रयोगों के माध्यम से बच्चों को विज्ञान, कला, गणित आदि की शिक्षा दी जायेगी।

३. **मध्य अवस्था**– इस अवस्था में कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों की शिक्षा को शामिल किया है। इसकी अवधि तीन वर्ष निर्धारित की गयी है। जिसमें कक्षा 6 के बच्चों को विषय आधारित पाठ्यक्रम को पढ़ाया जायेगा और कोडिंग भी शुरू की जायेगी। साथ ही सभी छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा में अवसर दिये जायेगे।

४. **माध्यमिक अवस्था**– इस अवस्था में कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के बच्चों की शिक्षा को शामिल किया गया है। इसकी अवधि 4 वर्ष निर्धारित की गयी है। नई शिक्षा नीति के छात्रों को वैकल्पिक विषयों को चयन करने की स्वतन्त्रता होगी। छात्र विज्ञान विषयों के साथ के साथ मानविकी व वाणिज्य के विषय का एक साथ अध्ययन कर सकते है।

- परीक्षाओं का बोझ कम करने के लिए 10वीं तथा 12वीं बोर्ड परीक्षाओं के प्रारूप में यथोचित परिवर्तन किया जायेगा जो छात्रों के सर्वांगीण विकास के अनुरूप होगा। वर्ष में एक बार वस्तुनिष्ठ तथा एक बार लिखित परीक्षाएं आयोजित की जायेगी। एक वर्ष में दो बार परीक्षाएं होगी ताकि छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को कम किया जा सके।
- ''कृत्रिम बुद्धि'' आधारित साफ्टवेयर का उपयोग छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने और छात्रों को उनके भविष्य से सम्बन्धित निर्णय लेने में मदद करने में किया जायेगा।
- छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारक निकाय के रूप में (PARAKH) नामक एक नए राष्ट्रीय आकलन केन्द्र की स्थापना की जायेगी।

५. नई शिक्षा नीति की चुनौतियाँ

- भारतीय संविधान में शिक्षा समवर्ती सूची में वर्णित है। इसी कारण से अधिकांश राज्यों में उनके शिक्षा बोर्ड है इसलिए राज्य सरकारों को इस फैसले के क्रियान्वयन के लिए सहयोग करना होगा।
- बच्चों की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में होने पर भी राज्य के सामने बहुत समस्या आ सकती है। जैसे विभिन्न राज्यों के लोग केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली में रहते है ऐसी स्थिति में अलग–अलग मातृभाषा जानने वाले बच्चों को किस माध्यम से शिक्षित किया जायेगा।

- प्राथमिक शिक्षा में कुशल शिक्षकों की कमी है। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत प्रारम्भिक शिक्षा के लिए बनाई गई व्यवस्था का क्रियान्वयन ऑगनबाड़ी के माध्यम से किया जायेगा।

६. भारत की नई शिक्षा नीति के लिए सुझाव

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) में प्रारम्भिक पॉच वर्ष शामिल है। इसे ऑगनबाड़ी के माध्यम से क्रियान्वित करने के लिए ऑगनबाड़ी केन्द्रों को उच्चतर गुणवत्ता के बुनियादी ढॉचें, खेलने के लिए उपकरण और पूर्ण रूप से प्रशिक्षित ऑगनबाड़ी कार्यकर्ता/शिक्षकों से सशक्त बनाया जाना चाहिए।

- प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3 से कक्षा 5 तक शिक्षा ग्रहण करने बच्चों के किताबों का बोझ कम कर नैतिक कथाओं के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए ताकि बच्चें का सर्वांगीण विकास हो सके।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण और उद्यमिता के माध्यम से बच्चों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में इन्टर्नशिप दी जानी चाहिए ताकि बच्चें भौगोलिक वातावरण से अवगत हो सके।

७. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत तथा वैश्विक मांग के अनुरूप परिलक्षित हो रही है। इसके सफल क्रियान्वयन पर ही इसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जा सकेगा। जिस उद्देश्य के साथ इसकी परिकल्पना की गयी है। उसकी पूर्ति सम्भव हो सकेगी। शिक्षा एक समवर्ती सूची का विषय है जिसका अर्थ है कि राज्य एवं केन्द्र सरकार के समन्वय एवं संस्थागत सहयोग के परिणाम पर इसकी उपलब्धियॉ धरातल पर प्रदर्शित हो सकेगी। इसके सफल क्रियान्वयन पर भारत भविष्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था अपनाते हुए आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ाता नजर आयेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. पाण्डेय, सुधांशु कुमार (2021). ''शिक्षा नीति : 2020 (कुछ संस्तुतियां एवं विमर्श)'', महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई, उ.प्र.।
२. जायसवाल, सीताराम (2022). ''भारतीय शिक्षा पद्धति का विकास एवं चुनौतियॉ–1'' प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ।
३. http://hindi.nvshq.org
४. http://www.drishtiias.com